इकाई 1 प्रवासन के सिद्धान्त और प्रारूप वर्गीकरण

संरचना

मोंदिरा दत्ता

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 प्रवासन की परिभाषा और कार्यक्षेत्र

1.4 प्रवासन के मॉडल और सिद्धांत

1.5 प्रवासन के निर्धारक तत्त्व

1.6 प्रवासन का वर्गीकरण

1.7 जेंडर और प्रवासन

1.8 सारांश

1.9 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

1.10 सन्दर्भ

1.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रवासन पर इस खण्ड की पहली इकाई प्रवासन की परिघटना से आपको परिचित कराएगी अर्थात, प्रवासन का अर्थ क्या है, यह कैसे होता है और प्रवासन उस स्थान को कैसे प्रभावित करता है जिस स्थान से लोग चले जाते हैं। इस इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया है कि प्रवासन उस नई जगह को कैसे प्रभावित करता है, जहाँ लोग बस जाते हैं। साथ ही, आप उन कारकों के बारे में पढ़ेंगे जो इस परिघटना को नियन्त्रित करते हैं। अन्त में, आप प्रवासन का महिलाओं के साथ सम्बन्ध और उन पर इसके प्रभाव के बारे में पढ़ेंगे।

आइए हम इस इकाई के अध्ययन के उद्देश्यों पर नजर डालें।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप इस योग्य हो जाएँगे कि :

- प्रवासन प्रक्रिया को परिभाषित कर सकें और उसके कार्यक्षेत्र पर चर्चा कर सकें;
- प्रवासन की प्रवृत्तियों से सम्बन्धित विविध सिद्धान्तों का अध्ययन कर सकें;
- किसी आवागमन के घटित होने के लिए मूल स्थल एवं गन्तव्य स्थल पर प्रभावी कारकों की पहचान कर सकें; और
- प्रवासन की प्रक्रियाओं पर जेण्डर के सन्दर्भ में चर्चा कर सकें।

1.3 प्रवासन की परिभाषा और कार्यक्षेत्र

पाठ्यक्रम के खण्ड की इकाई 2 में शहरीकरण के सम्बन्ध में प्रवासन के बारे में आपने पहले पढ़ा था। इस इकाई में जेंडर पर इसके प्रभाव के साथ-साथ प्रवासन और इसके विभिन्न पहलुओं के बारे में हम विस्तार से पढ़ेंगे।

प्रवासन या आबादी का एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और/या भौतिक परिस्थितियों का एक परिणाम है। प्रवासन की सबसे खास बात यह है कि यह आबादी के आकार को बढ़ा या घटा सकता है और एक निश्चित समय में इसकी संरचना को काफी बदल सकता है। किसी स्थान की प्रजनन शक्ति और मृत्यु-दर पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, जब पुरुष आबादी पलायन करती है, तो महिलाएँ अकेली रह जाती हैं जिससे प्रजनन दर में कमी आ जाती है। जनसंख्या के वैज्ञानिक अध्ययन हेतु अंतर्राष्ट्रीय संघ (International Union for the Scientific Study of Population & IUSSP) के सहयोग से बहुभाषी जनसांख्यिकी शब्दकोश (Multilingual Demographic Dictionary) स्थानिक गतिशीलता के रूप में प्रवासन का वर्णन करता हैं, जिसमें निवास के सामान्य स्थान में परिवर्तन शामिल है जो प्रशासनिक सीमा से परे एक आवागमन को सूचित करता है।

एक प्रवासी वह व्यक्ति है जिसने अपने सामान्य निवास स्थान को प्रवास अन्तराल के दौरान कम से कम एक बार बदल दिया हो (आम तौर पर, अन्तराल एक वर्ष, पाँच वर्ष, दस वर्ष या दो जनगणनाओं के बीच की अवधि हो सकती है)।

बॉक्स सं. 1

प्रवासन को आमतौर पर एक भौगोलिक आवागमन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें सामान्य निवास स्थान में परिवर्तन शामिल होता है। प्रवासन में स्थानों के दो समूहों – उद्गम स्थान और गन्तव्य स्थान – के साथ-साथ आबादी के भी दो समूह शामिल होते हैं। स्थान का कोई भी परिवर्तन उद्गम स्थान के सम्बन्ध में एक बाह्य-प्रवासन (out-migration) और गन्तव्य स्थान के सम्बन्ध में एक अन्तः प्रवासन (in-migration) होता है।

सामान्य निवास स्थान में परिवर्तन स्थायी, अर्द्ध-स्थायी अथवा अस्थायी आधार पर हो सकता है। क्षेत्रीय सीमाओं के पार लोगों के अपेक्षाकृत स्थायी आवागमन का एक प्रशासनिक सीमा के अन्तर्गत आन्तरिक प्रवासन और बाह्य-प्रवासन के रूप में उल्लेख किया जाता है। जब सीमाएँ अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार होती हैं तो इसे आप्रवासन (immigration) और उत्प्रवासन (emigration) कहा जाता है। आन्तरिक प्रवासन या आप्रवासन के स्थान को प्राप्तकर्ता आबादी (receiver population) और बाह्य–प्रवासन या उत्प्रवासन के स्थान को प्रेषक आबादी (sender population) कहा जाता है। प्रवासन में दो वर्ग शामिल हैं क्योंकि इसमें आबादी के दो वर्ग शामिल हैं, उद्गम स्थान और गन्तव्य स्थान। उद्गम स्थान वह स्थान है जहाँ से व्यक्ति हमेशा चलना शुरू करता है, अर्थात प्रस्थान बिन्दु। प्रवासियों के लिए उद्गम स्थान या तो निवास का क्षेत्र है या ऐसे निवास का क्षेत्र जहाँ से अन्तिम बार प्रस्थान किया गया था। गन्तव्य स्थान आम तौर पर वह क्षेत्र होता है, जहाँ पर यात्रा समाप्त हो जाती है। प्रवासियों के लिए गन्तव्य स्थान प्रवास अन्तराल के अन्त में निवास क्षेत्र है। 'प्रवासन धारा' (Migration Stream) किसी दिए गए प्रवास अन्तराल के दौरान की गयी यात्राओं की कुल संख्या है जिनके उद्गम और गन्तव्य का क्षेत्र साझा होता है। व्यवहार में, हालाँकि, यह उद्गम और गन्तव्य के साझा क्षेत्रों वाले प्रवासियों की एक इकाई है।

साधारण शब्दों में 'प्रवासन' लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन हो सकता है। दूसरे शब्दों में, प्रवासन एक नए अथवा अर्द्ध-स्थायी निवास की स्थापना के उद्देश्य से एक निर्दिष्ट सीमा के पार लोगों का आवागमन है। संयुक्त राष्ट्र बहुभाषी जनसांख्यिकी शब्दकोश (संयुक्त राष्ट्र, 1956) 'प्रवासन' को एक भौगोलिक इकाई और दूसरी भौगोलिक

इकाई के बीच की भौगोलिक गतिशीलता या स्थानिक गतिशीलता के रूप में परिभाषित करता है। इसमें प्रायः उद्गम स्थान से लेकर गन्तव्य स्थान या आगमन स्थान तक का परिवर्तन शामिल होता है। इस प्रकार के प्रवास को स्थायी प्रवासन (permanent migration) कहा जाता है और इसे आवागमन के अन्य प्रकारों से अलग किया जाना चाहिए जिसमें निवास का स्थायी परिवर्तन शामिल नहीं है।

दूसरी ओर प्रवासन और शरणार्थियों के लिए संघीय कार्यालय (Federal Office for Migration and Refugee) की परिभाषा में कहा गया है कि प्रवासन तब होता है जब कोई व्यक्ति अपने सामान्य निवास स्थान की अवस्थिति को परिवर्तित करता है। प्रवासन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन (International Organization for Migration & IOM) के अनुसार, 'प्रवासन' किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह का आवागमन है, चाहे वह दो देशों के बीच हो या एक ही देश के भीतर उसके दो स्थानों के बीच हो।

बॉक्स सं. 1

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन संगठन (International Organization for Migration) एक अन्तर-सरकारी संगठन है। द्वितीय विश्व युद्ध द्वारा विस्थापित लोगों की मदद करने के लिए इसे प्रारम्भ में 1951 में यूरोपीय प्रवासन के लिए अन्तर-सरकारी समिति (Intergovernmental Committee for European Migration & ICEM) के रूप में स्थापित किया गया था।

यह प्रवासन के क्षेत्र में अग्रणी अन्तर-सरकारी संगठन है। आईओएम (IOM) सबके हित में मानवीय और व्यवस्थित प्रवासन को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित है। इसके लिए वह सरकारों और प्रवासियों को सेवाएँ और सलाह देता है।

आईओएम प्रवासन का व्यवस्थित और मानवीय प्रबन्धन सुनिश्चित करने, प्रवासन के मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने, प्रवासन की समस्याओं के व्यावहारिक समाधानों की तलाश में मदद करने तथा शरणार्थियों, देश के भीतर विस्थापित लोगों सहित जरूरतमन्द प्रवासियों को मानवीय सहायता देने का काम करता हैः चाहे वे शरणार्थी हों, विस्थापित व्यक्ति हों या अन्य उजड़े हुए लोग हों। आईओएम के संविधान में प्रवासन और आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ आवाजाही की स्वतन्त्रता के अधिकार के बीच सम्बन्ध को मान्यता दी गई है।

आईओएम मोटे तौर पर प्रवासन प्रबन्धन के चार क्षेत्रों में काम करता हैः प्रवासन और विकास; प्रवासन को सुगम बनाना; प्रवासन का विनियमन करना और बाध्य प्रवासन को सम्बोधित करना। क्रॉस-कटिंग गतिविधियों में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन कानून का प्रचार-प्रसार, नीतिगत बहस और मार्गदर्शन, प्रवासियों के अधिकारों की सुरक्षा, प्रवासन स्वास्थ्य और प्रवासन का जेंडर आयाम शामिल हैं।

इसके अलावा, आईओएम ने अक्सर अपनी मातृभूमि से बाहर शरणार्थियों के लिए निर्वाचनों का आयोजन किया है, जैसा कि 2004 में अफगानिस्तान के निर्वाचनों और 2005 में इराक के निर्वाचनों के समय हुआ था।

प्रवासन की अवधारणा में सभी प्रकार की आबादी के आवागमन को शामिल किया गया है, जिसमें निवास स्थान का परिवर्तन शामिल है, चाहे उसका कारण, उसकी संरचना या अवधि कुछ भी हो तथा उसमें विशेष रूप से मजदूरों, शरणार्थियों, विस्थापितों और उजड़े हुए लोगों का आवागमन शामिल है।

अधिकांश देशों में यह देखा गया है कि बड़े पैमाने पर लोगों के खेती वाले क्षेत्रों से कस्बों, कस्बों से दूसरे शहरों और एक देश से दूसरे देश (बोग्यू, 1961) में स्थानान्तरण के साथ औद्योगीकरण और आर्थिक विकास हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में उछाल के बाद अधिकांश एशियाई और लैटिन अमेरिकी देशों ने ऐसी स्थिति का अनुभव किया। इसके विपरीत, विलियम पैटर्सन का विचार है कि ऐसी अवधारणा अनुचित है क्योंकि इसका मतलब यह है कि मनुष्य गतिहीन है और वह हर जगह तब तक स्थिर (Fixed) बना रहता है जब तक कि उसे स्थानान्तरित होने के लिए किसी बल द्वारा प्रेरित न किया जाए (पीटरसन, 1969 पृष्ठ, 289)।

जिन लोगों ने प्रवास की घटनाओं के बारे में सामान्यीकरण करने की कोशिश की है या आन्तरिक प्रवासन आवागमन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करने का प्रयास किया है, उन्होंने दो अलग-अलग दृष्टिकोण (भेंडे और कानिटकर, 1978) अपनाए हैं।

- पहला दृष्टिकोण मुख्य रूप से 'धक्के' (push) और 'खिंचाव' (pull) के कारकों के सन्दर्भ में देखी जाने वाली स्थितियों से सम्बन्धित है। यह घर पर स्थिति का अध्ययन करने का प्रयास करता है जो एक व्यक्ति को अपने मूल स्थान से बाहर जाने के लिए विवश करती है और साथ ही यह बाहर की उन स्थितियों और दशाओं का, जो किसी व्यक्ति को निवास के वर्तमान स्थान से बाहर जाने के लिए आकर्षित करती हैं, अध्ययन करने की कोशिश करता है।
- दूसरा दृष्टिकोण आनुभविक सामान्यीकरण तैयार करने का प्रयास करता है और प्रवासन के पैटर्न का वर्णन करता है, विशेष रूप से, सार्वभौमिक कानूनों के रूप में मान्य गणितीय मॉडलों के रूप में।

बॉक्स सं. 1.3

प्रवासन एक ऐसी जटिल प्रक्रिया है जिसे किसी अन्य प्रकार के मानव स्थानान्तरण से अलग करना कठिन हो जाता है। कम्पाला कन्वेंशन, जिसे कन्वेंशन फॉर द प्रोटेक्शन एण्ड असिस्टेंस ऑफ इण्टरनली डिसप्लेस्ड पर्सन्स (Convention for the Protection and Assistance of Internally Displaced Persons & IDP), 2009 के रूप में भी जाना जाता है, प्रवासन को इस तरह परिभाषित करता है : "ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों का ऐसा समूह जिन्हें पलायन करने या अपने घरों या पारम्परिक जगहों को छोड़ने के लिए कहा जाता है या बाध्य किया जाता है, विशेषकर सशस्त्र संघर्ष के प्रभाव, सामान्यीकृत हिंसा की स्थितियों, मानव अधिकारों के उल्लंघन या प्राकृतिक अथवा मानव-निर्मित आपदाओं से बचने के लिए, और जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त राज्य की सीमा को पार नहीं किया हो "।

शरणार्थियों की स्थिति से सम्बन्धित कन्वेंशन और प्रोटोकॉल के अनुच्छेद 1 (2) के अनुसार शरणार्थी की परिभाषा है, "वह व्यक्ति जो जाति, धर्म, राष्ट्रीयता, किसी सामाजिक समूह की सदस्यता या किसी राजनीतिक राय के कारण, अपने मूल देश से बाहर होने के उत्पीड़न से स्थापित डर के कारण अथवा उस देश की सुरक्षा का लाभ उठाने में असमर्थ या अनिच्छुक; या वे व्यक्ति जिनके पास ऐसी अवांछित घटनाओं के कारण कोई राष्ट्रीयता नहीं है और अपने पहले के पारम्परिक मूल देश से बाहर हैं, जो असमर्थता अथवा भय के कारण वापस होने में अनिच्छुक हैं" (संयुक्त राष्ट्र, 1956)।

पिछले अनुभाग के प्रति अपनी समझ का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित अभ्यास करने का प्रयत्न कीजिए।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) सरल तरीके से 'प्रवासन' को परिभाषित कीजिए।

2) निम्नलिखित से आप क्या समझते हैं :

- आन्तरिक और बाह्य प्रवासन (in and out migration)
- प्राप्तकर्ता और प्रेषक आबादी (receiver and sender population)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

आइए, अब प्रवासन की परिघटना को शासित करने वाले विभिन्न सिद्धान्तों के बारे में पढ़ें।

1.4 प्रवासन के मॉडल और सिद्धान्त

आइए, हम पहले प्रवासन के मॉडलों पर चर्चा करें।

विश्लेषणात्मक मॉडल के आधार पर प्रवासन को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित कर सकते हैं – समष्टि और व्यष्टि विश्लेषणात्मक मॉडल। समष्टि विश्लेषण में शामिल कुछ प्रमुख मॉडल रेवेन्स्टाइन मॉडल (ग्रेविटी मॉडल), ज़िपफ मॉडल (मॉडल ऑफ लीस्ट एफर्ट) और स्टॉफर मॉडल (इंटरवीनिंग अपॉर्चुनिटी मॉडल) हैं। प्रमुख व्यष्टि विश्लेषणात्मक मॉडल ली का मॉडल है। इनमें से कुछ मॉडल बुनियादी मॉडलों का विस्तृत और अद्यतन रूप हैं, जैसे रेवेन्स्टाइन, ज़िपफ, ली, टोडारो, आदि।

1880 के दशक में रेवेन्स्टाइन ने जन्म स्थान के जनगणना वाले आँकड़े का उपयोग करके ब्रिटेन में प्रवासन के ढाँचे का अध्ययन किया। इस मॉडल में रेवेन्स्टाइन ने 'प्रवासन परिघटना' (migration phenomena) के बारे में बताया जो प्रवासन की धाराओं के इर्द-गिर्द घूमती है। उनके अनुसार प्रवासन एक सतत प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप जनसंख्या का अधिक संतुलित पुनर्वितरण होता है। हालाँकि, प्रत्येक प्रवासन धारा के लिए एक विरोधी धारा है। वास्तव में यह मॉडल भविष्यसूचक अभिकथनों की श्रृंखला पर आधारित है। प्रवासन की धाराओं का मौलिक उदाहरण यह है कि जब कोई व्यक्ति अपने उद्‌गम स्थान से किसी विशिष्ट गन्तव्य की ओर पलायन करता है तब वह उन दो स्थानों के बीच एक कड़ी बनाता है और फिर उस स्थान से अन्य लोग उस गन्तव्य स्थान पर आने लगते हैं, जिससे सामाजिक केशिका संचलित होती है।

- अधिकांश प्रवासी अपेक्षाकृत कम दूरी तय करते हैं जिससे प्रवासियों की संख्या और यात्रा की दूरी के बीच एक विपरीत सम्बन्ध बनता है।
- लम्बी दूरी की यात्रा करने वाले लोग गन्तव्य स्थानों पर उपलब्ध अवसरों से काफी हद तक अनजान रहते हैं और बड़े शहरी केंद्रों की ओर रुख करते हैं।
- प्रवासन विभिन्न चरणों में होता है, जिससे प्रवासन चरणबद्ध हो जाता है। रेवेन्स्टाइन प्रवासन विभिन्न चरणों में होता है, जो चरणबद्ध प्रवासन की दिशा में जाता है।
- चरणबद्ध प्रवासन को समझने के लिए निम्नलिखित को देखें।

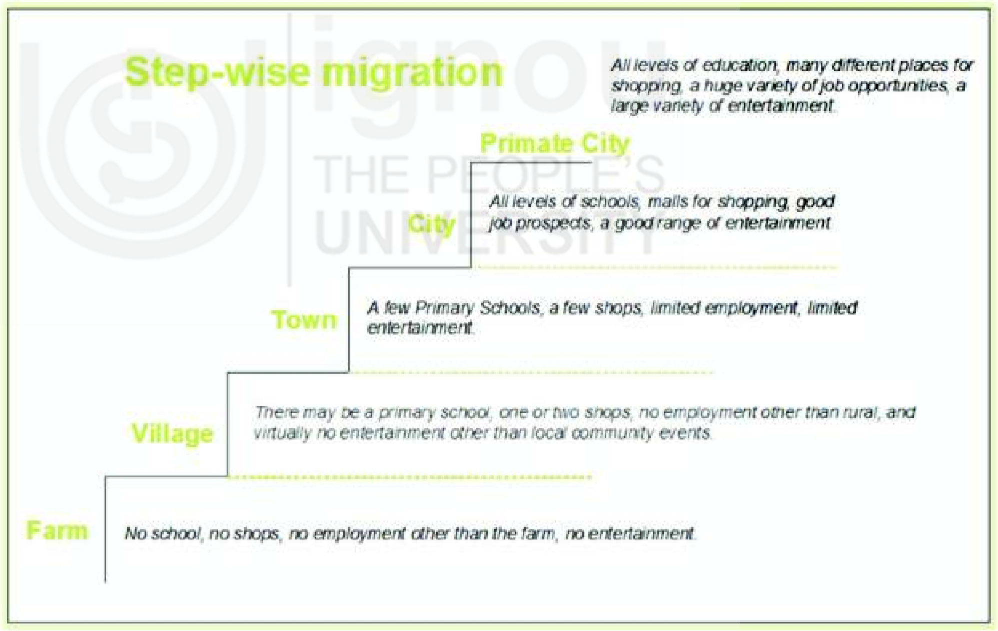

चित्र 1.1

स्रोत: http://geographybylizz.wikispaces.com/file/view/stepwise_migration.jpg /30549045/ Stepwise_migration.jpg

शहरों की चरघातांकी वृद्धि के आधार पर, ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के पलायन की सम्भावना, शहरी केन्द्रों के लोगों की तुलना में, अधिक होती है। तकनीकी प्रगति के साथ-साथ प्रवासन का परिमाण बढ़ता है। रेवेन्स्टाइन के अनुसार पुरुषों की तुलना में महिलाओं की, अपेक्षाकृत कम दूरी के लिए अपने देश के भीतर, पलायन करने की सम्भावना अधिक होती है। महिलाओं की तुलना में पुरुषों का उत्प्रवास अधिक होता है। अधिकतर प्रवासी वयस्क होते हैं।

एवरेट ली ने प्रवासन के निर्णय से जुड़े कारकों और प्रवास के उद्देश्य को निम्नलिखित चार श्रेणियों में संकल्पनाबद्ध किया है (ली, 1969):

1) उद्गम क्षेत्रों से जुड़े कारक
2) गन्तव्य क्षेत्रों से जुड़े कारक
3) बाधाओं में हस्तक्षेप
4) व्यक्तिगत कारक

ली इन सभी चार श्रेणियों की ओर संकेत करते हुए बताते हैं कि प्रत्येक क्षेत्र में ऐसे कई कारक हैं जो उस क्षेत्र से लोगों के दूर जाने या उस क्षेत्र में लोगों के रुके रहने या उस क्षेत्र की तरफ लोगों के आकर्षित होने के सम्बन्ध में कार्य करते हैं। (भेंडे और कानितकर, 1978)।

चित्र 1.2

स्रोतः Everett S Lee, (1969), "A Theory of Migration"

बाधाओं में हस्तक्षेप प्रवासन को घटित होने से रोक सकता है या पलायन करने वाले लोगों की संख्या को कम कर सकता है। बाधाओं में हस्तक्षेप करने वाले कारक नकारात्मक और सकारात्मक होने के साथ-साथ तटस्थ भी हो सकते हैं; जैसे कि धर्म, सेवा, गलत जानकारी, राजनीतिक मतभेद, सरकारी नीतियाँ, नौकरी के शीघ्रतापूर्ण अवसर, यात्रा की लागत, भाषा आदि। ली ने पाया कि उद्गम स्थान के साथ-साथ गन्तव्य स्थान पर भी हस्तक्षेप करने वाली बाधाएँ, जीवन चक्र, व्यक्तियों की सामाजिक और साथ ही साथ व्यक्तिगत विशेषताएँ ऐसे मुख्य कारक हैं जो प्रवासन या स्थानिक गतिशीलता के लिए अग्रणी हैं। उनकी परिकल्पना थी कि प्रवासन, प्रवासन की धारा और परिमाण के साथ-साथ प्रवासियों के अभिलक्षणों पर भी निर्भर करता है।

किसी दिए गए क्षेत्र में 'प्रवासन का परिमाण (Volume of Migration)' उस क्षेत्र की विविधता के साथ बदलता रहता है। विविधता की उच्च कोटि (स्थानिक/नस्लीय/जातीय) का परिणाम उच्चतर प्रवासन के रूप में सामने आता है। यह परिमाण व्यापार-चक्रों में मन्दी या तेजी के बीच की कठिनाइयों एवं प्रवृत्तियों के द्वारा प्रभावित होता है। इसलिए प्रगति की अवस्था के साथ प्रवासन का परिमाण और प्रवासन की दर परिवर्तित होती रहती है। दूसरी तरफ, यदि प्रवासन में योगदान देने वाले मुख्य कारक 'धक्का देने वाले कारक (Push Factors)' हैं तो 'प्रवासन की धारा (Stream of Migration)' बहुत ऊँची हो जाती है, और विशेषकर तब, जब लोगों को 'धक्का देने वाले कारक (Push Factors)', 'खींचने वाले

कारकों (Pull Factors)' की तुलना में अधिक विवश करते हों। प्रत्येक मुख्य धारा के लिए एक प्रतिधारा भी विद्यमान होती है। धाराओं की दक्षता इस बात पर निर्भर है कि हस्तक्षेप करने वाली बाधाएँ कितनी मजबूत या कमजोर हैं तथा इस दौरान क्या आर्थिक परिस्थितियाँ बेहतर हैं अथवा नहीं। धाराओं और प्रतिधारा की दक्षता कमजोर होगी यदि मूलस्रोत और गन्तव्य का क्षेत्र एक जैसा ही है।

प्रवासियों के अभिलक्षण मूलस्रोत और गन्तव्य स्थलों की जनसंख्या के अभिलक्षणों की तरह होने की तरफ प्रवृत्त होते हैं। प्राथमिक रूप से आकर्षित करने वाले कारकों (Pull Factors) के प्रति अनुक्रिया करने वाली प्रवासी प्रवास के लिए विवश नहीं होते हैं। ऐसे मामले में प्रवासन की तरफ झुकाव बहुत अधिक नहीं होता है। हालाँकि धक्का देने वाले कारकों के प्रति सशक्त अनुक्रिया की स्थिति में प्रवास करने की तरफ झुकाव अधिक हो जाता है। इसलिए, प्रवासन धक्का देने वाले और आकर्षित करने वाले कारकों के बीच 'द्वि-प्रारूपी (bi-model)' अन्तर्क्रिया हो जाने की तरफ अग्रसर होता है।

अपने 'हस्तक्षेपकारी अवसर मॉडल (Intervening Opportunity Model)' में स्टोफर ने तर्क दिया है कि हस्तक्षेपकारी अवसरों के प्रभाव के लिए दूरी एक प्रतिनिधि तत्व है। यह माना जाता है कि स्रोत-स्थल से गन्तव्य-स्थल तक प्रवासन की धारा हस्तक्षेपकारी अवसरों के साथ व्युत्क्रमानुपाती सम्बन्ध रखती है। दूसरे शब्दों में, किसी दी गयी दूरी के लिए गति या पलायन करने वाले लोगों की संख्या गन्तव्य-स्थल पर उपलब्ध अवसरों की संख्या के साथ सीधे समानुपाती होती है तथा हस्तक्षेपकारी अवसरों की संख्या के साथ व्युत्क्रमानुपाती होती है। इसलिए, स्थान का चरित्र दूरी की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होता है। स्टोफर ने अपने इस मॉडल को, आगे चलकर, 'प्रतिस्पर्धी प्रवासन मॉडल (Competing Migrant Model)' के रूप में स्वयं परिमार्जित किया।

टोडारो मॉडल (1971) ऐसे आर्थिक कारकों की बात करता है जो धक्का देने वाले और आकर्षित करने वाले कारकों के बीच सर्वाधिक प्रभावशाली हैं। वैयक्तिक रूप से प्रवासी अनिवार्यतः आर्थिक लागत और लाभ का विश्लेषण करते ही हैं। इस प्रकार, नीति-निर्माता लोग, ग्रामीण क्षेत्रों में निवेष और रोज़गार के नवीन अवसरों का सृजन करके ग्रामीण प्रवासन को धीमा कर सकते हैं।

गुरुत्व मॉडल न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण नियम पर आधारित है और इसका विस्तार विलियम जे. रेली द्वारा सन् 1931 में किया गया था। इस मॉडल के अनुसार, 'क' और 'ख' स्थलों के बीच आने-जाने वाले लोगों की संख्या 'क' स्थल की जनसंख्या और 'ख' स्थल की जनसंख्या के गुणनफल में उनके बीच की दूरी के वर्ग से भाग देने पर प्राप्त संख्या के बराबर होती है। दूसरे शब्दों में, दो शहरी केन्द्रों के बीच लोगों की गतिशीलता उनकी जनसंख्या के गुणनफल के समानुपाती होगी और उनके बीच की दूरियों के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होगी। प्रवासी लोगों की सम्भावित संख्या वहाँ अधिक होगी, जहाँ प्रस्थान वाले स्थल और गन्तव्य वाले स्थल की जनसंख्या विशाल है। सामाजिक कारकों को सम्मिलित करने के लिए इस मॉडल को आगे परिष्कृत किया गया।

प्रवासन के प्रतिमानों को शासित करने वाले विभिन्न मॉडलों के बारे में पढ़ने के बाद, इस बिन्दु पर यह महत्वपूर्ण है कि पिछले अनुभाग में आपने जो पढ़ा है, उसका मूल्यांकन किया जाए।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

क) रैवेन्सटाइन के प्रवासन के सिद्धान्त में शामिल प्रमुख अभिलक्षण क्या हैं?

ख) स्टोफर द्वारा प्रस्तावित हस्तक्षेपकारी अवसर मॉडल क्या है?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

आइए, अब प्रवासन को निर्धारित करने वाले कारकों के बारे में सीखें।

1.5 प्रवासन के निर्धारक तत्व

प्रवासन अनेक प्राकृतिक और मानव-निर्मित कारकों को प्रभावित करता है और उनसे प्रभावित भी होता है और इसका परिणाम धक्का देने वाले और आकर्षित करने वाले कारकों के रूप में सामने आता है। मूलस्रोत वाले स्थल पर कार्यरत धक्का देने वाले कारक जनसंख्या वृद्धि की उच्च प्राकृतिक दर के रूप में हो सकते हैं जो विद्यमान संसाधनों पर जनसंख्या का दबाव पैदा करते हों; प्राकृतिक संसाधनों की समाप्ति के रूप में हो सकते हैं; सूखे, बाढ़ या भूकम्प और दुर्भिक्ष जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में हो सकते हैं; तथा उन रूपों में हो सकते हैं जहाँ तीव्र सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संघर्षों के कारण सुरक्षा की

दृष्टि से लोग दूसरे स्थानों की तरफ प्रवासित हो जाने के लिए विवष हो जाया करते हैं। भारत जैसे विशाल देश में प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रत्येक वर्ष बहुत सारे लोगों का प्रवासन आम बात है। आकर्षित करने वाले कारक गन्तव्य स्थलों पर कार्य करते हैं और नवीन उद्योगों की स्थापना के कारण, लाभकारी रोज़गार के नवीन अवसरों के प्रावधान के कारण, शहरों में उच्च शिक्षा की बेहतर सुविधाओं आदि के कारण ये कारक लोगों को आकर्षित करते हैं। हर साल मुम्बई और नई दिल्ली जैसे बड़े शहरों की तरफ हज़ारों लोग खिंचे चले आते हैं जो पूरे देश में प्रवासियों की सर्वोच्च प्रतिशतता है।

कुछ चर ऐसे हैं जो या तो धक्का देने वाले या आकर्षित करने वाले कारकों के रूप में कार्य करते हैं, उदाहरण के लिए, तकनीकी परिवर्तन का चर, जिसका परिणाम शहरी क्षेत्रों में असंख्य आकर्षक कारकों की स्थापना के रूप में सामने आता है या जो ग्रामीण क्षेत्रों को कृषि के आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराता है और व्यक्ति को कृषिगत भूमि से उसके बन्धन से मुक्त करता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय कारकों के आधार पर इन दोनों कारकों को आगे भी वर्गीकृत किया जा सकता है।

जो सामाजिक कारक प्रवासन को प्रभावित करते हैं, वे हैं – सांस्कृतिक समृद्धि, बेहतर कल्याणकारी कार्यक्रम, बेहतर विद्यालय, आधारभूत संरचना, मजबूत सामाजिक नेटवर्क (जैसा कि बांग्लादेशी प्रवासियों के मामले में है), ऐसे मित्रों या सगे-सम्बन्धियों की उपस्थिति जो पहले ही प्रवासन करके उस गन्तव्य-स्थल तक आ गए हैं, धार्मिक समुदाय निर्मित करने की प्रेरणा, विवाह इत्यादि। ये सभी आकर्षित करने वाले कारक हैं जो किसी व्यक्ति को प्रवास करने के लिए आकर्षित करते हैं। दूसरी तरफ, सांस्कृतिक कलह, और धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने पर प्रतिबन्ध जैसे कारक धक्का देने वाले कारक के रूप में कार्य कर सकते हैं जिसके कारण कोई व्यक्ति अपने निवास स्थान से पलायन करने का निर्णय ले सकता है।

किंग्सले डेविस के अनुसार, भारतीय जनसंख्या की गतिशीलता के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारक निम्नलिखित रहे हैं – कृषि की प्रधानता, जाति व्यवस्था, कम उम्र में विवाह और संयुक्त परिवार की प्रणाली, भाषा और संस्कृति की विविधता, शिक्षा का अभाव और अन्य कारक (डेविस, 1968)। स्वयं के लिए और अपने बच्चों के लिए कृषिगत भूमि हासिल करने के बेहतर आर्थिक अवसर, कृषिगत भूमि की सस्ती खरीद, तात्कालिक सम्पत्ति, नौकरी के अधिक अवसर, उच्चतर वेतन, पूर्व-भुगतान (प्रीपेड) यात्रा (सम्बन्धियों से) कुछ प्रमुख आर्थिक कारक हैं जो आकर्षित करने वाले कारकों के रूप में कार्य करते हैं, जबकि रोजगार या उद्यमिता के अवसरों का अभाव, कृषिगत भूमि की कमी, नया उद्यम शुरू करने में कठिनाई आदि धक्का देने वाले कारकों के कुछ उदाहरण हैं।

राजनीतिक स्वतन्त्रता, जैसे सरकार चुनने का अधिकार, सभी मूल अधिकारों के प्रवर्तन का अधिकार आदि भी लोगों को प्रवास करने के लिए प्रेरित करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। किन्तु विपरीत राजनीतिक परिस्थितियों में, जैसे दमनकारी कानूनी स्थितियों, सैन्य प्रारूप, युद्ध, सैनिकों द्वारा लोगों को हटाये जाने या उन पर बल प्रयुक्त करने, राजनीतिक या धार्मिक स्वतन्त्रता के अभाव जैसी दशाएँ जन-प्रवासन को प्रेरित करती हैं जैसाकि समय-समय पर अनुभव किया गया है और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षो के मामले में भी ऐसा ही अनुभव रहा है। ऐसे प्रवासन का एक उदाहरण अफगानिस्तान से अफगानियों का पड़ोसी देशों में चले जाना है। ऐसी परिघटनाएँ राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रियाओं के दौरान भी अनुभूत होती हैं। उदाहरण के लिए, भारत की स्वतन्त्रता के समय पाकिस्तान में रहने वाले हिन्दुओं और भारत में रहने वाले मुसलमानों, दोनों, ने क्रमशः भारत और पाकिस्तान में प्रवास किया।

पर्यावरणीय कारकों से उपजा पर्यावरणीय प्रवासन प्राकृतिक आपदाओं और संकटों के कारण होता है, जैसे – अकाल या सूखा, बाढ़, सुनामी, भूकम्प आदि। कभी-कभी मानव-निर्मित आपदाएँ भी समान रूप से जिम्मेदार रही हैं। विकास के नाम पर लगातार बाँधों, सड़कों, नहरों, रेलमार्गों आदि के निर्माण ने भी लोगों को विस्थापित किया है और उन्हें अपनी मातृभूमि को छोड़ने के लिए विवश किया है।

किसी क्षेत्र की वहन क्षमता जैसे जनांकिकीय कारक भी उन महत्वपूर्ण कारकों में शामिल हैं जो प्रवासन की दिशा में ले जाते हैं। जब किसी भौगोलिक क्षेत्र की वहन क्षमता अपनी चरम सीमा पर पहुँचकर संतृप्त हो जाती है तो प्रवासन प्रारम्भ हो जाता है और अगर ऐसा होना जारी रहता है तो अन्ततः यह जनसंख्या के आकाशीय पुनर्वितरण की तरफ ले जाता है। जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि में उच्च दर के कारण जनसंख्या का दबाव बहुत बढ़ जाता है और इस कारण प्रवासन घटित होता है ताकि सन्तुलन कायम रहे। बीमारियों (सर्वव्यापी रोगों और महामारियों) का विस्फोट भी प्रवासन के लिए उत्तरदायी है।

अब, अपनी समझ का मूल्यांकन करने के लिए निम्नलिखित अभ्यास को करें।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) प्रवासन–अध्ययनों में धक्का देने वाले और आकर्षित करने वाले कारकों का क्या तात्पर्य है? इसका एक उदाहरण दीजिए।

2) भारत में अन्तः और बाह्य प्रवासन (In and Out Migration) के उदाहरण दीजिए।

आगे आने वाले अनुभागों में आप प्रवासन के विभिन्न प्रकारों के बारे में पढ़ेंगे।

1.6 प्रवासन का वर्गीकरण

प्रवासन का वर्गीकरण मुख्य रूप से तीन कारकों पर निर्भर करता है। ये तीन कारक हैं – प्रेरणा, दूरी और समय। प्रेरणा और दूरी परस्पर अन्तर्सम्बन्धित हैं। लम्बी दूरी और छोटी दूरी के प्रवासन के आधार पर प्रवासन को दो प्रकारों में उप-विभाजित किया जा सकता है। प्रवासन को निम्नलिखित रूपों में भी वर्गीकृत किया जा सकता है–

आन्तरिक प्रवासन वह है जिसके अन्तर्गत किसी भौगोलिक या प्रशासकीय परिसीमा के दायरे के भीतर मूल निवास-स्थान को परिवर्तित करने वाली कोई गतिशीलता शामिल होती है, चाहे यह गतिशीलता अस्थायी इरादे से की गयी हो या स्थायी इरादे से। आन्तरिक प्रवासन में अन्तःराज्यीय/अन्तःजनपदीय और अन्तरराज्यीय/अन्तरजनपदीय दोनों प्रकार के प्रवासन शामिल होते हैं, जहाँ अन्तरराज्यीय/अन्तरजनपदीय प्रवासन का तात्पर्य लोगों का एक राज्य या एक जिले की सीमा से आर-पार जाकर प्रवासन करने से है। दूसरी तरफ, अन्तःराज्यीय या अन्तःजनपदीय प्रवासन क्रमशः राज्य या जिले के भीतर ही घटित होता है। भारतीय महिला का विवाह के उपरान्त पति के घर चले जाना आन्तरिक प्रवासन का एक अच्छा उदाहरण है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सीमाएँ पार नहीं की जातीं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन तब घटित होता है जब लोगों की गतिशीलता में राष्ट्रीय सीमाओं का पार किया जाना शामिल होता है। नौकरियों की तलाश में भारतीय युवाओं के संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय देशों और खाड़ी के देशों में जाने को इस श्रेणी के प्रवासन में वर्गीकृत किया जा सकता है। आप्रवासन (immigration) और उत्प्रवासन (emigration) शब्द क्रमशः किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के भीतर या बाहर की जाने वाली गतिशीलता को वर्णित करता है, और इन शब्दों का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन के सन्दर्भ में ही किया जाता है। किसी प्रवासी के दृष्टिकोण से देखें, तो आप्रवासन किसी ऐसे देश की यात्रा करने को कहेंगे, जिसकी नागरिकता हासिल नहीं की गयी है। इसके अतिरिक्त यह भी, कि इस आप्रवासन में प्रवासी का इरादा बस जाने का नहीं होता है। दूसरे देशों में अपेक्षाकृत अल्प-अवधियों के लिए जाने वाले पर्यटको और विद्यार्थियों को इसी श्रेणी के अन्तर्गत रखा जाता है। उत्प्रवासन किसी व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे देश या क्षेत्र में बसने के लिए उसके अपने देश या क्षेत्र को छोड़ देना है।

अन्तः प्रवासन (In-migration) किसी विशिष्ट क्षेत्र के भीतर की गतिशीलता को बताता है, जबकि बाह्य प्रवासन (Out-migration) किसी विशिष्ट क्षेत्र से बाहर की गतिशीलता से सन्दर्भित है। इन दोनों तरह के प्रवासनों का सम्बन्ध किसी देश के भीतर ही किए जाने वाले प्रवासनों से है यानी ये आन्तरिक प्रवासन हैं। गन्तव्य-स्थल के सन्दर्भ में प्रत्येक गतिशीलता या तो आप्रवासन है या फिर अन्तः प्रवासन तथा मूल स्थान या प्रस्थान के सन्दर्भ में प्रत्येक गतिशीलता या तो उत्प्रवासन है या फिर बाह्य प्रवासन।

प्रवासन–अध्ययनों में जिस चीज का आमतौर पर बहुतायत में उल्लेख किया जाता है, वह कृषि के श्रम चक्रों से जुड़ी हुई है और इसे मौसमी प्रवासन कहते हैं। इसका तात्पर्य अल्प अवधि के लिए मवेशियों और परिवार के साथ किए जाने वाले प्रवासन से है। 'गुज्जर' और 'बकरवाल' जैसी घुमन्तू आबादी अपनी बकरियों और भेड़ों के साथ घाटी से पहाड़ों पर ऊँचे स्थानों पर चली जाया करती हैं। मौसमी प्रवासन को अल्पावधि प्रवासन के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है। इस तरीके के प्रवासन में कोई व्यक्ति अपने सामान्य निवास वाले देश से इतर किसी दूसरे देश में कम से कम तीन महीने तथा अधिक से अधिक बारह महीने (एक वर्ष) के लिए चला जाता है। लेकिन मनोरंजन या छुट्टी के लिए तथा मित्रों या

सगे-सम्बन्धियों के पास जाने के लिए की गयी यात्राएँ; व्यापार, चिकित्सकीय उपचार या धार्मिक तीर्थयात्राओं के लिए की जाने वाली यात्राएँ इसमें शामिल नहीं होतीं। ऐसी यात्राएँ इस प्रवासन के लिए अपवाद मानी जाती हैं। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के अनुसार दीर्घकालिक प्रवासन ऐसा प्रवासन है जिसमें कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का कोई समूह अपने सामान्य निवास वाले देश से इतर किसी अन्य देश में कम से कम बारह महीने (एक वर्ष) के लिए प्रवास करता है ताकि गन्तव्य-देश प्रवास करने वाले व्यक्ति के लिए प्रभावशाली रूप से उस व्यक्ति का सामान्य निवास ही बन जाए।

क्रमबद्ध प्रवासन प्रवासन का एक ऐसा रूप है जहाँ प्रवासी व्यक्ति के निर्णय को विचार में लिया ही नहीं जाता। प्रवास करने वाले परिवारों के अधिकांश बच्चों को इसके सर्वोत्तम उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जहाँ उनसे बड़े लोगों द्वारा लिए गए निर्णयों में उन बच्चों की कोई सहभागिता या भूमिका ही नहीं होती। इसका दूसरा उदाहरण वह पत्नी है, जो अपने पति के साथ जाती ही है।

ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन ग्रामीण विकास की शक्तियों के बीच असमानता के कारण पैदा होता है, जहाँ प्रवासन का प्रवाह कम विकसित ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक विकसित ग्रामीण क्षेत्रों की तरफ होता है; उदाहरण के लिए, असम में चाय बागान में कार्य करने वाले श्रमिक, पंजाब और हरियाणा में काम करने वाले उत्तर प्रदेश और बिहार के कृषि मजदूर। किन्तु यह हमेशा सत्य नहीं होता क्योंकि किसी ग्रामीण महिला का विवाह के बाद अपने जन्मस्थल से अपने पति के घर जाने को भी ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

हालिया समय में, ग्रामीण से शहरी प्रवासन बहुत प्रचलित हो गया है क्योंकि बहुत सारे लोग नौकरियों की तलाश में शहरों की तरफ चले जाते हैं। ग्रामीण से शहरी प्रवासन नगरीकरण के लिए एक सम्भावित कारक बन गया है। ग्रामीण–शहरी प्रवासन तीव्र औद्योगीकरण प्रक्रिया के कारण होता है।

आर्थिक और कल्याणकारी आवश्यकताओं के कारण किसी व्यक्ति या व्यक्ति-समूहों की गतिशीलता शहरी–शहरी प्रवासन की तरफ ले जाती है। नौकरियाँ और बेहतर आधारभूत संरचनाएँ जैसे आवास, विद्यालय आदि छोटे कस्बों में रहने वाले लोगों को मेट्रो या विशाल नगरों की तरफ आकर्षित करते हैं। यह विकासशील देशों में बढ़ते नगरीकरण के साथ-साथ अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। शहरी-शहरी प्रवासन को 'चरणबद्ध प्रवासन' के आलोक में भी देखा जा सकता है, जैसाकि रैवेन्स्टाइन ने प्रस्तावित भी किया है :

छोटा कस्बा – शहर – बड़े शहर / मेट्रोज़

दरभंगा – पटना – दिल्ली

शहरी–ग्रामीण प्रवासन का तात्पर्य शहरी क्षेत्रों से ग्रामीण इलाकों की तरफ लोगों की गतिशीलता से है। इसे शहरी–विरोधी प्रवासन या वापसी प्रवासन भी कहा जाता है। यह परिघटना उन्नत राष्ट्रों में अधिक प्रचलित है, हालाँकि हालिया समय में इसे विकासशील देशों के सन्दर्भ में भी प्रेक्षित किया गया है। ऐसा प्रवासन तब होता है जब लोग किसी शहरी स्थल (शहरों, निर्मित क्षेत्रों, जैसे दिल्ली) से किसी ग्रामीण स्थल (गाँव की तरफ, अन्य बिखरे-बिखरे आबादी वाले स्थानों, जैसे नोएडा, ग्रेटर नोएडा) की तरफ प्रवास करते हैं।

बॉक्स सं. 1.4

प्रवासन की प्रमुख प्रवृत्तियों में शामिल हैं –
i) ग्रामीण–ग्रामीण प्रवासन
ii) ग्रामीण–शहरी प्रवासन
iii) शहरी–ग्रामीण प्रवासन
iv) शहरी–शहरी प्रवासन
v) अन्तः और बाह्य प्रवासन
vi) दीर्घकालिक प्रवासन
vii) क्रमबद्ध प्रवासन
viii) कुशल/अर्द्ध/अकुशल प्रवासन

इन सबके अतिरिक्त, प्रवासन के दो और भी प्रकार हैं – 'कुशल' और 'अर्द्ध-अकुशल प्रवासन'। इनका उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है। उदाहरण के लिए, प्रबन्धकों और सूचना तकनीकी से जुड़े उच्च शिक्षित पेशेवर लोग रोजगार की तलाश में विदेश चले जाते हैं और श्रमिक रोजगार की तलाश में अपेक्षाकृत बड़े शहरों की तरफ चले जाते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) प्रवासन के निम्नलिखित रूपों के बीच अन्तर स्थापित कीजिए :

- आप्रवासन और उत्प्रवासन

- अन्तः प्रवासन और बाह्य प्रवासन

- दीर्घकालिक प्रवासन और अल्पकालिक प्रवासन

- चरणबद्ध और वापसी प्रवासन

इस इकाई के अन्तिम अनुभाग में आप प्रवासन के जेंडर–आयामों के बारे में पढ़ेंगे।

1.7 जेंडर और प्रवासन

आइए, अब इस बारे में पढ़ते हैं कि जेंडर किस प्रकार प्रवासन को प्रभावित करता है तथा इस सम्बन्ध में विविध विमर्श क्या हैं जो जेंडर और प्रवासन के बीच के अन्तर्सम्बन्धों को समाहित करते हैं।

जेंडर, अन्तरिक्ष और गतिशीलता के बीच के अन्तर्सम्बन्धों को समझना नारीवादी अनुसन्धान में अन्वेशण का एक हाल-फिलहाल का ताजा क्षेत्र है। विशेषकर, जेंडर और विकास के विमर्श में जेंडर, प्रवासन और आजीविका पर विशेष जोर दिया गया है। नारीवादी अन्तरप्रतिच्छेदनीयता को अनुसन्धान के एक उपकरण के रूप में प्रयुक्त कर रहे हैं ताकि प्रवासन के क्षेत्र में एक जेण्डर–परिप्रेक्ष्य की रचना की जा सके। नारीवादी समाजशास्त्रियों, दार्शनिकों और मनोविज्ञानियों ने अन्तरप्रतिच्छेदनीयता को एक विश्लेषणात्मक औजार के रूप में प्रयुक्त किया है ताकि जेंडर को सामाजिक संस्थाओं, व्यवहारों और प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में समझा जा सके। अन्तरप्रतिच्छेदनीयता का लक्ष्य वह प्रतिमान है जिसके अन्तर्गत पदसोपानीय सामाजिक व्यवस्थाएँ, जैसे जाति, प्रजाति, जेंडर, नृजातीयता आदि समाज में असमानता पैदा करने में अपना योगदान देती हैं। रीता अफसर (2011) के अनुसार, अन्तरप्रतिच्छेदनीयता के तीन अभिलक्षण जेंडर, अन्तरिक्ष और गतिशीलता के बीच के अन्तर्सम्बन्धों को व्याख्यायित करने के लिए बहुत उपयोगी होंगे। अन्तरप्रतिच्छेदनीयता के तीन संकल्पनात्मक अवयव इस प्रकार हैं :

- सामाजिक विभेद का प्रमुख रूप होने के कारण जेंडर सम्बन्ध प्रवासन को प्रभावित करते हैं।
- अपने आप में एक तरल श्रेणी होने के कारण जेंडर अन्तरिक्ष के सन्दर्भ में विविध अनुभवों को सामने लाता है; और
- प्रवासन के अध्ययन में अन्तरप्रतिच्छेदनीयता का ढाँचा जेंडर को एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में मानता है।

इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जेंडर सम्बन्ध प्रवासन की प्रक्रिया, कारण और परिणाम को प्रभावित कर सकते हैं। यह विभिन्न अन्तरिक्षों में संस्कृतियों और व्यक्तित्वों को उत्पन्न कर सकता है और अन्ततः जेंडर सम्बन्ध प्रवासन–अनुसन्धान में संस्थाबद्ध हो चुकी असमानता का विरोध कर सकता है और उनको चुनौती दे सकता है। अधिकांश प्रवासन–अध्ययनों में जेंडर दमन और सुभेद्यताएँ प्रतिबिम्बित होती हैं हालाँकि प्रवासी महिलाओं को सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ताओं के रूप में प्रक्षेपित करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। दमनकारी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में महिलाओं पर अभिकरण के रूप में जोर देना और प्रवासी महिलाओं की प्रतिवादी रणनीतियों पर ध्यान देना जेंडर–प्रवासन अनुसन्धान का विषय-क्षेत्र है।

सेसिला टकोली और रिचार्ड मबाला (2010) का तर्क है कि जेंडर और पीढ़ी ऐसे महत्वपूर्ण कारक हैं जो ग्रामीण और शहरी सन्दर्भों में प्रवासन और गतिशीलता की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। प्रवासन और गतिशीलता निहित या छिपे हुए रूप में जटिल प्रक्रियाएँ हैं जिनमें गतिशीलता के प्रकार, जनांकिकी और सांस्कृतिक अनुभव सम्मिलित हैं। वे सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूपान्तरणों को स्थानीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तरों पर प्रतिबिम्बित करते हैं। उदाहरण के लिए, नगरीकरण में वृद्धि से आर्थिक संरचना, जनसंख्या के आजीविका के प्रतिमानों, शहरी आधारभूत संरचना की पुनर्संरचना आदि की दिशा में चीजें अग्रसर हो जाती हैं और इसके साथ जेंडर इन प्रक्रियाओं को आकार देने के लिए एक

महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। यदि संक्षिप्त में कहें तो, "जेंडर और पीढ़ीगत सम्बन्ध मुख्य तत्व हैं जो इन रूपान्तरणकारी प्रक्रियाओं को आकार भी देते हैं और इनसे आकार ग्रहण भी करते हैं। (टैकोली और मबाला, 2011 पृ. 390)।"

बॉक्स सं. 1.5

प्रवासन और गतिशीलता की जेण्डरीकृत समझ अनुसन्धान के विषय-क्षेत्र को अनेक दिशाओं तक विस्तृत करती है, जिसमें संसाधनों और राजनीतिक निर्णय-निर्माण तक परिवार के सदस्यों की पहुँच; आजीविका रणनीतियों की प्रकृति; जेंडर-सम्बन्धों का विकास करना तथा जाति, वर्ग और नृजातीयता के आधार पर अन्तर-पारिवारिक संघर्षों का विश्लेषण करना शामिल है।

अपने लेख 'परिवार, जेंडर और ग्रामीण–शहरी प्रवासन : अन्तर्सम्बन्धों पर विचार और नीति के लिए चिन्ताएँ' में सिल्विया चैण्ट (1998) जेंडर–चयनात्मक (selective) प्रवासन की अवधारणा पर बात करती हैं। वे इस पर चर्चा करती हैं कि विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या की जेंडर–चयनात्मक गतिशीलता किस प्रकार परिवारों में विविधता लेकर आती है, उदाहरण के लिए, दक्षिण एशियाई क्षेत्र में ऐसे परिवारों का बढ़ते जाना जिनमें परिवार की मुखिया महिलाएँ होती हैं। वे उन दोनों स्थितियों में अन्तर करती हैं जहाँ महिलाएँ परिवार की विधि-अनुसार (de-jure) मुखिया हैं और जहाँ महिलाएँ परिवार की तथ्य-अनुसार (de-facto) मुखिया हैं। परिवारों के ये दोनों रूप ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की तरफ महिलाओं के प्रवासन के लिए निर्धारक-कारक हैं।

महिलाओं का परिवार की विधि-अनुसार (de-jure) मुखिया होना विधवा हो जाने, अलगाव हो जाने या अविवाहित रह जाने की स्थिति में घटित होता है। जिन परिवारों में महिलाएँ विधि-अनुसार (de-jure) मुखिया होती हैं, उनमें महिलाओं को प्रायः शहरों में अपना जीवन-निर्वाह करने के लिए प्रवासन का सहारा लेना पड़ता है। परिवारों में महिलाओं का तथ्य-अनुसार (de-facto) मुखिया होना तब घटित होता है जब पुरुष शहरी क्षेत्रों की तरफ प्रवास कर जाते हैं। ऐसे मामलों में महिलाएँ घटिया आर्थिक संसाधनों, साख और प्रशिक्षण तक कम पहुँच तथा निर्णय-निर्माण के निम्न स्तर जैसी स्थितियों के साथ पीछे छूट जाया करती हैं। ये स्थितियाँ इन महिलाओं को और अधिक सुभेद्य बना देती हैं। इस सन्दर्भ में, महिलाओं के तथ्य-अनुसार मुखिया वाले परिवारों में महिलाएँ प्रवासन को कभी-कभी गरीबी से निकलने के एक मार्ग के रूप में देखती हैं। प्रवासन और गतिशीलता को जेंडर-परिप्रेक्ष्य में समझने से आप अनेक नवीन बहुमुखी क्षेत्रों से परिचित होंगे, जिनमें शामिल हैं – अनुसन्धान के एक उपकरण के रूप में अन्तरप्रतिच्छेदनीयता, सामाजिक-सांस्कृतिक रूपान्तरण, राजनीतिक निर्णय-निर्माण और नीतिगत हस्तक्षेप। इस खण्ड की अगली इकाइयों में आप इनमें से कुछ मुद्दों का अध्ययन करने जा रहे हैं।

1.8 सारांश

प्रवासन लोगों की अस्थायी या स्थायी गतिशीलता को शामिल करने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके कारण मूलस्रोत-स्थल और गन्तव्य-स्थल दोनों में परिवर्तन आ जाता है। इन परिवर्तनों के कुछ चरों पर निर्भर होते हैं। प्रवासन दो क्षेत्रों को शामिल करता है, स्रोत और गन्तव्य। इसका प्रभाव गन्तव्य-स्थलों पर सकारात्मक हो सकता है, जबकि स्रोत-स्थलों पर नकारात्मक हो सकता है या स्थिति इसके विपरीत भी हो सकती है या यह भी सम्भव है कि स्रोत और गन्तव्य दोनों स्थलों पर इसका प्रभाव सकारात्मक हो या दोनों स्थलों पर इसका प्रभाव नकारात्मक ही हो। यह प्रभाव सकारात्मक होगा या नकारात्मक, यह क्षेत्रों की

सामाजिक-आर्थिक, जनांकिकीय और राजनीतिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त यह निवल (net) प्रवासन के परिमाण पर तथा उस सीमा पर भी निर्भर करता है, जिस सीमा तक निवल गतिशीलता विशिष्ट आयु-लिंग और व्यावसायिक समूहों को लेकर चयनात्मक है। ऐसी कोई भी जनसंख्या जो प्रवासन (अन्तः या बाह्य) की ऊँची दरों से गुजरी हो, भविष्य में उस जनसंख्या की आयु-लिंग संरचना में बदलाव आता ही है। विभिन्न अभिलक्षणों वाले लोगों के लगातार अन्तः और बाह्य प्रवासन के कारण जनसंख्या का नृजातीय, प्रजातीय और सांस्कृतिक संघटन परिवर्तित होता रहता है। यह परिवार और गोत्र की संरचना के साथ-साथ सामाजिक भूमिकाओं और मूल्यों को भी प्रभावित करता है।

1.9 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

1) प्रवासन को परिभाषित कीजिए और उदाहरण सहित इसके मुख्य अभिलक्षणों पर चर्चा कीजिए।

2) प्रवासन के प्रमुख प्रकार कौन-कौन से हैं? इसे किस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है?

3) प्रवासन की प्रक्रियाओं का अध्ययन करने में शामिल मुख्य सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।

4) वे कौन से कारक हैं जो प्रवासन को प्रभावित करते हैं? उदाहरणों की सहायता से चर्चा कीजिए।

1.10 सन्दर्भ

Afsar, Rita (2011). Contextualising gender and migration in South Asia: Critical Insights. Gender, Technology and Development. 15:389, D01: 10.1177/097185241101500304.

Bhende, Asha A. and Kanitkar Tara (1978), op cit, Pp 390.

Bogue, Donald J., (1961) "*International Migration*", in Philip M. Hauser and Otis Dudley Duncan (Eds.), The study of Population.

Cecilia Tacoli and R.Mabala (2010). Euploring Mobility and Migration in the Content of Rural Urban Linkages: Why Gender and Generation Matter. Environment and Urbanisation. 22(389). D01: 10.1177/0956247810379935.

Chant, Sylvia (1998). Households, gender and rural urban migration: reflections on linkages and Considerations for policy. Environment and Urbanisation, Vol 10, No.1.

D avis, Kingsley (1968). The Population of India and Pakistan, Principles of Population Studies. New Delhi: Himalaya Publishing House. Princeton University.

Lee, Everett S. (1969), "*A Theory of Migration*" in J. A. Jackson (Ed.). *Migration,* Cambridge: Cambridge University Press.

Peterson, William, (1969), *Population,* New York: MacMillan.

United Nations, (1956), *Multilingual Demographic Dictionary*, ST/SOA/SER. A/29, Population Studies No. 29, New York.

http://geographybylizz.wikispaces.com/file/view/Stepwise_migration.jpg/30549045/Stepwise_migration.jpg

1.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Afsar, Rita (2011). Contextualising gender and migration in South Asia: Critical Insights. Gender, Technology and Development 15:389, D01: 10.1177/097185241101500304

Chant, Sylvia (1998). Households, Gender and Rural Urban Migration: Reflections on Linkages and Cousideratious for Policy. Environment and Urbanisation, Vol 10, No.1.

Cecilia Tacoli and R.Mabala (2010). Euploring Mobility and Migration in the Content of Rural Urban Linkages: Why Gender and Generation Matter. Environment and Urbanisation. 22(389). D01: 10.1177/0956247810379935.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY